शिक्षक का आत्मावलोकन

जुलाई 2016 में मैं अज़ीम प्रेमजी विद्यालय दिनेशपुर से जुड़ी। यहाँ काम करते हुए अब लगभग एक साल पूरा होने वाला है। मैंने विज्ञान से स्नातक किया है और डाइट लखनऊ से बीटीसी का कोर्स किया है। हालाँकि अपनी इंटर्नशिप के दौरान मैंने पहले भी कुछ सरकारी प्राथमिक विद्यालयों में बच्चों के साथ काम किया था लेकिन यहाँ काम करने का अनुभव बिलकुल अलग और चुनौतीपूर्ण रहा।

तो जब मैं स्कूल से जुड़ी तो शुरुआत में मुझे चीज़ें बहुत आसान लगीं। मुझे प्राथमिक कक्षाओं को अँग्रेज़ी और उच्च प्राथमिक कक्षाओं को विज्ञान पढ़ाना था। लेकिन जैसे-जैसे दिन बीतते गए चीज़ें थोड़ी मुश्किल होती गईं। बच्चों को, विशेषकर छोटे बच्चों को सम्भालना मेरे लिए एक कठिन कार्य था। उन्होंने मुझे पागल बना दिया था।

मेरे द्वारा तैयार की गईं पाठ योजनाएँ और जो टीएलएम मेरे पास थे वो इन छोटे 'जम्पिंग जैक्स' के लिए कभी पर्याप्त नहीं होते। वास्तव में, मैं कक्षा तीन को अँग्रेज़ी पढ़ाने से जूझ रही थी।

मैंने अपने विचारों को अपने सहकर्मियों के साथ साझा किया। मैं यह जानने के लिए उत्सुक थी कि कैसे यह स्थिति बेहतर होगी। जब उन सभी ने अपने विचार साझा किए तो मैं उनके अनुभवों और उन परिस्थितियों के बीच सम्बन्ध को देख पाने में सक्षम थी जिनका सामना मैं कर रही थी। मैंने कई तरीक़े अपनाए लेकिन कुछ तो था जो सही नहीं था।

जल्दी ही मुझे कक्षा तीन का कक्षा शिक्षक घोषित किया गया। 'नहीं.....!' जी हाँ, यह खबर सुनने के बाद मेरा पहली प्रतिक्रिया यही थी कि 'इससे बुरा और क्या हो सकता है।'

तो बतौर कक्षा शिक्षक जब मैं पहले दिन कक्षा में दाखिल हुई मैंने कुछ आधार नियम बनाए। मसलन उनके बैठने की व्यवस्था बदल दी वग़ैरह। एक सप्ताह बाद भी चीज़ें ठीक होती नहीं दिख रही थीं। जुलाई से दिसम्बर तक मैं वास्तव में कक्षा तीन के बच्चों के समूह को सम्भालने के लिए संघर्ष कर रही थी। अब तक बहुत समय बीत चुका था। मैंने सोचा, बहुत सोचा कि 'आखिर दिक़्क़त क्या है? क्यों बच्चे मेरी बात नहीं सुन रहे हैं? चीज़ों को ठीक करने के लिए मुझे क्या करना चाहिए? क्या मैं एक बुरी शिक्षक हूँ? क्या मुझे इस्तीफा दे देना चाहिए?' इन विचारों ने पूरी तरह मेरे दिमाग़ पर कब्ज़ा कर लिया था लेकिन मेरे पास इनमें से एक का भी जवाब नहीं था।

हमारी एक मीटिंग थी जिसमें हम बच्चे कैसे सीखते हैं और ऐसे ही अन्य महत्त्वपूर्ण बिन्दुओं पर विमर्श कर रहे थे। उसी दौरान एक मुद्दा 'शिक्षक विद्यार्थी सम्बन्ध' का भी आया और अचानक ही यह बात मेरे दिमाग़ में कौंधी कि, 'यह सम्बन्ध कहाँ हैं? मैं उन्हें जानती ही कितना हूँ? वास्तव में मैं उनके बारे में कुछ भी नहीं जानती थी।'

तो आखिरकार मुझे अपने सवालों के लिए एक संकेत मिल गया था। मैंने कभी वह सम्बन्ध बनाया ही नहीं। मैं सिर्फ अपने सहकर्मियों के अनुभवों के अनुसार प्रतिक्रियाएँ दे रही थीं। समस्या को सुलझाने का जो तरीक़ा उन्होंने अपनाया था मैं भी वही आजमा रही थी। लेकिन बच्चे अलग-अलग हैं, मैं अलग हूँ तो फिर मैं एक जैसे समाधान की अपेक्षा कैसे कर सकती हूँ। इसके बाद मैंने उनका हिस्सा बनने और उनके बारे में ज़्यादा-से-ज़्यादा जानने का प्रयास किया। मैंने उनकी पसन्द, ना-पसन्द, समस्याएँ, परिवार वग़ैरह के बारे में बातचीत की। कक्षा के दौरान या कक्षा के बाहर भी मैं उनके साथ रहने का प्रयास करती। मैंने अपने आप को उनके लिए और सुलभ बनाया। मैं उनके विषय शिक्षकों के साथ उनके कार्य, उनके व्यवहार और कहाँ पर कमी है इस सब के बारे में बात करती। वह किस प्रकार की कक्षा चाहते हैं, कक्षा में उन्हें किस प्रकार की कठिनाइयों का सामना कर पड़ रहा है, उनके समाधान के लिए किस तरह के नियम बनाने चाहिए आदि पर उनके विचारों के बारे में हम (मैं और बच्चे) बातचीत करते। अब मैं उन्हें और उनकी क्षमताओं के बारे में थोड़ा-थोड़ा जानने लगी थी, इसलिए मैंने उनकी रुचि के अनुसार उन्हें कुछ कार्य सौंपे और यह देखकर मैं चकित थी कि वास्तव में वह कितने ज़िम्मेदार हैं।

एक शिक्षक के रूप में मेरा विकास अभी जारी है और अभी भी मुझे उनमें से कुछ के साथ समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है लेकिन ठीक है। जल्द ही हम एक-दूसरे को और बेहतर रूप से जान पाएँगे।

कनिका श्रीवास्तव
शिक्षक, अज़ीम प्रेमजी विद्यालय
दिनेशपुर, उधमसिंह नगर
kanika.srivastava@azimpremjifoundation.org
अनुवाद : कविता तिवारी